पाठ्यक्रम पर आधारित मूक बधिर शिक्षा के लिए नवीन शिक्षण अधिगम विधियों का अध्ययन

शिक्षा शास्त्र पीएच.डी उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

Submitted By
JV'n Prof. Dr. Saraswat

Submitted to
JV'n Akanksha Yadav

फैकल्टी ऑफ ऐजूकेशन मैथोड़ोलोजी

ज्योति विद्या पीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत

सन् 2018–2019

नवीन शिक्षण अधिगम विधियों पर आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन मूक बधिर शिक्षा के लिए

पृष्ठभूमि

पाठ्यक्रम आधारित नवीन शिक्षण अधिगम विधियों का पता लगाने के लिए मूक बधिर शिक्षा पर यह अध्ययन केन्द्रित है। मूक बधिर शिक्षा में विशेष पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जो मूक बधिर शिक्षा में लाभप्रद है। मूक बधिर शिक्षा के लिए ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण होना चाहिए जो उनकी विशेष आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके, किसी प्रकार की समस्या जो पाठ्यक्रम के माध्यम से होकर मूक बधिर शिक्षा में स्पष्ट रूप से नजर आती है। मूक बधिर शिक्षा का प्रारूप संकुचित, व्यवहारिक, उचित योजनाओं पर आधारित, अवरोध मुक्त वातावरण, भाषा सम्बन्धित समस्या, भावनात्मक अवरोध, पाठ्यक्रम का संगठनात्मक प्रारूप, व्यवसाय को सीखने व सक्षम बनाने योग्य पाठ्यक्रम का विकास, उस शिक्षा का पाठ्यक्रम व्यवहारिक स्वरूप पर मूक बाधिर शिक्षा पर गंभीर चर्चा, पाठ्यक्रम नये सत्र का बदलाव जो मूक बधिर शिक्षा नवीन शिक्षण अधिगम विधियों के माध्यम से राष्ट्र द्वारा भविष्य के लिए बनायी परियोजना मानकों के अनुरूप उचित व आवश्यक सहयोग पर स्वयं निर्धारित राय जाहिर की। मूक बधिर शिक्षा का भविष्य सुन्दर व सहयोगपूर्ण बनाने के लिए उसके किये गये पाठ्यक्रम को नवीन स्तर से संचालित करना है। शोध एक महत्वपूर्ण क्रिया है इसकी सहायक रूप से ही हम स्वयं द्वारा बनाया हुआ शोध शीर्षक को एक सफल रूप दे पायेंगे अतः इस पर विचार बनाने का उद्देश्य केवल मूक बधिर बच्चों के प्रति लगाव है तथा इसकी समस्या को उजागर कर इस विषय पर अपना स्वयं का अनुमान लगाकर इसमें उचित व मूक बधिर शिक्षा व्यवस्था में आवश्यकत तत्वों पर शोध बनाने का विचार किया गया है। इसके शीर्षक का निर्माण मूक बधिर शिक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्यों को परखने व समझने के पश्चात पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण मुद्दा लगा जो नवीन दिशा में जुड़कर अपनी स्वयं द्वारा अनुमानित समस्या को समाधान में बदलने के विचार से इस शीर्षक पर शोध तैयार करने का गंभीर विचार किया गया है।

परिचय

1918 में इस विषय पर प्रकाशित प्रथम पुस्तक 'The Curriculum' में जॉन फ्रेंकलिन वौबिट ने कहा है कि एक विचार के रूप में पाठ्यक्रम की जड़ें रेस कोर्स के लिए लैटिन भाषा में हैं और पाठ्यक्रम का वर्णन ऐसे कार्यों एवं अनुभवों के रूप में किया है जिनके माध्यम से

प्रत्येक बच्चे व वयस्क की शिक्षा का उबरता रूप सामने आता है। पाठ्यक्रम निर्माण सिर्फ किताबों के विषय रूपी ज्ञान से नहीं होता है अपितु पूरी शिक्षा व्यवस्था जैसे विद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय प्रशासन उसके निर्माण किये गये गठन व स्वरूप से, अनुभवों द्वारा संचालित किये गय उद्देशों को शिक्षा में नयी दिशा प्रदान करने के लिए बनाया जाता है। 1900 के बाद से पाठ्यक्रम सिद्धान्त व उद्देश्यों की व्याख्या और व्याख्या के साथ इस पर गंभीर चिंतन किया गया। 1925 में दैनिक जीवन की गतिविधयों के शुद्ध विश्लेषण से अधिक छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति व आवश्यकताओं के आधार पर गंभीर तथ्यों पर विचार स्वरूप चयन किया जाने लगा। 1940 व 1950 के बीच, पाठ्यक्रम के सफल समापन के लिए प्रदान करने के लिए इस तरह से व्यवहार के संदर्भ में राज्य द्वारा निर्धारित उद्देश्यों के लिए प्रयास किये गये हैं। इस बहु–आयामी गतिविधि को समझने और उसका शिक्षा में प्रबंधन लाने के लिए पाठ्यक्रम डिजायन के विभिन्न मॉडलों व विधियों को पाठ्यक्रम विकास में डिजायन व नवीन विधियों का सूत्रीकरण करने का प्रावधान सदैव से शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत लाने का प्रयास किया गया। NCF 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की गयी। प्रो0 यशपाल की अध्यक्षता में विद्वानों ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में अपना योगदान दिया। नवीन स्थल के आधार पर पाठ्यक्रम का मूक बधिर शिक्षा में अनुसंधान की आधारभूत अवधारणाओं, अनुसंधान प्रक्रियाओं और आकल्पां को समझना। विभिन्न प्रकार की साधारण व असाधारण अनुसंधान समस्याओं को चुनने की तकनीकी विधि को समझकर उसका प्रारूप तैयार कर उसके अतीत से जुड़ी तथ्यात्मक चर्चा पर ध्यान देकर नवीन शोध तैयार करना।

पाठ्यक्रम की परिभाषा कनिघंम के अनुसार–: ''पाठ्यचर्या अध्यापकरूपी कलाकार के हाथ में वह साधन है जिसके आधार से वह अपने पदार्थ रूपी शिष्य को अपने कलाग्रहरूपी विद्यालय में अपने आदर्श (उद्देश्यों) के अनुसार विकसित अथवा रूप प्रदान करता है।''

प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा के स्तर तक हमने जो भी शिक्षा प्राप्त की है इस शिक्षा प्राप्ति की प्रक्रिया के दौरान हम सभी ने कई तरह की संपन्न होने वाली प्रक्रियाओं में विद्यालयों में होने वाली प्रार्थना, समय सारणी, कक्षाओं का संचालन, प्रायोगिक क्रियाकलाप, वर्ष में समय के अनुसार ली गई परीक्षाओं का आयोजन व अनेक गतिविधियों का आयोजन व मूल्यांकन की उच्च व्यवस्था आदि सभी पाठ्यक्रम में अंकित होती है और उनका शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अलावा मूक बधिर शिक्षा में ''अमेरिकन ऐनल्ज ऑफ द डेफ'' के अनुसार शिक्षा की विभिन्न प्राणालियाँ मौजूद है। जैसे–मौखिक प्रणाली, हस्त प्रणाली, हस्त

वर्णमाला प्रणाली, श्रवण प्रणाली एवं मिश्रित प्रणाली है। मूक बधिर का परिचय देते हुए जब कोई व्यक्ति बोलने और सुनने में कठिनता या शून्य अवस्था में होता है इसके सामान्य लक्षण– कान का भारी होना, सांय–सांय की आवास आना और तरह–तरह की आवाजें आना, कान में दर्द होना आदि बधिर होने की निशानी है यदि जन्म से, भाषा का विकास होने से पहले सुनने में कठिनाई हो या सुनने की शून्य अवस्था हो तो उस अवस्था को मूक बधिर की उपाधि मिल जाती है परन्तु भाषा का विकास होने के बाद कोई सुनने से सम्बन्धित समस्या हो या दुर्घटनाग्रस्त तो वह केवल बधिर ही कहलाता है। इसमें अली यावर जंग राष्ट्रीय श्रवण विकलांग संस्थान, मुंबई का योगदान रहा है। तथा मूक बधिर शिक्षा में समेकित शिक्षा का प्रावधान बनाया गया जो उन्हें सामान्य से जोड़कर रख सके। 150 वर्षों की गुलामी और उसके बाद अपनाइ गयी शिक्षा व्यवस्था में मूक बधिर शिक्षा का प्रावधान काफी हद तक व्यवस्थित हुआ है। सहायक सामग्री एवं सहायक उपकरण मूक बधिर की शिक्षा पर गतिशीलता, संचार और उनकी दैनिक गतिविधियों में सहायता प्रदान करके उनकी जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने वाले उपकरण है।

उद्धेश्य

1. <u>नवीन शिक्षण अधिगम विधियों के सहाय्य से संकुचित रूप में पाठ्यक्रम का निर्माण–:</u>

   मूक बधिर बच्चों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण संकुचित रूप में होना चाहिए–
   मूक बधिर बच्चों की पाठ्यक्रम डिजाइन का स्वरूप छोटा होना चहिए ताकि वह बृहत्काय पाठ्यक्रम के कारण विषयों में उलझे न रह सकें। वर्तमान पाठ्यक्रम को लेकर अत्यधिक परिवर्तन करने की योजनाओं एवं अवधारणाओं का विकास हो रहा है। जो सभी छात्र–छात्राओं के लिए नियमित है किन्तु मूक बधिर बच्चों के लिए विशेष शिक्षा की व्यवस्था की गयी है। तो उनके लिए पाठ्यक्रम का स्वरूप विशेष होना चाहिए। संकुचित पाठ्यक्रम का अर्थ है जो आवश्यक विषय हैं उन पर विचार कर उचित समाधान निकाल, उसे पाठ्यक्रम व्यवस्थित करना चाहिए। पाठ्यक्रम का उद्देश्य ज्ञान पर निर्धारित होना चाहिए।

   - इसका आन्तरिक स्वरूप व्यवहारिक होना चाहिए जो बच्चों की समझ और अध्ययन में शामिल हो सके तथा उनके अध्ययन की विधि उद्देश्यपूर्ण होगी।

तथा उनके अन्तिम स्तर पर लिये गये मूल्यांकन का भी उद्देश्य महत्वपूर्ण होगा। व्यवहार आधारित शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम में उचित महत्व है।

- व्यवहार आधारित पाठ्यक्रम के उद्देश्य से होने चाहिए शिक्षा की व्यवस्था मं प्रत्येक स्तर के बच्चों को ध्यान पर रखकर उस पर विचार विमर्श कर ही पाठ्यक्रम संकुचित व व्यवहारिक होना चाहिए।
- शुद्ध प्रारूप पर अध्यधिक बल लगाने की उचित व व्यवस्थित क्रिया कलाप का आयोजन होना चाहिए। क्रिया व कलाप दोनों ही महत्वपूर्ण अंग है जो सभी बच्चों के लिए अध्यन करने के लिए प्रभावपूर्ण है। ज्ञान को अलग–अलग उद्देश्य के साथ और अलग–अलग उद्देश्य के मार्ग पर सहायक हो सके।
- सार्वजनिक कार्यक्रमों में भागरीदारी की आवश्यकता के लिए प्रस्ताव रखा गया। वीडियो और आई.सी.टी. सहित बधिर शिक्षा के शैक्षणिक सामग्री का उत्पादन किया गया। शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य दुनियाँ के हर एक मूक बधिर बच्चे की महान क्षमता को बाहर लाना है।
- सीखने की सहजता, मौलिकता लाना होगा पाठ्यक्रम में जो हर बच्चे को पूरे मन से भागीदारी देता है और इस प्रकार ज्ञान के क्षितिज को चौड़ा करता है। पाठ्यक्रम डिजायन करने में या बनाने के निर्णय लेने में उद्देश्यों की केन्द्रिय भूमिका होती है। निर्णय उद्देश्यों को ध्यान में रखकर लिये जाते हैं। इस भूमिका को इसके उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम बनाता है। कूट नीतियों की योजना का प्रथम भाग सदैव यह है कि ''हम कहाँ जाना चाहते हैं?'' व ''हम कहाँ जा रहे हैं?''

इसमें निम्नलिखित विंदुओं पर ध्यान केन्द्रित करने की व्यवस्था–:

- भाषायुक्त अवरोधमुक्त वातावरण–: एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना जो किसी प्रकार की बाधा को नहीं बढ़ाता हो तथा उसका सम्बन्ध भाषा युक्त अवरोध मुक्त वातावरण से हा और प्रयास की अवधारणा को बढ़ावा देता हो और भाषा संबन्धित बाधा को दूर करने का प्रयास करता हो। हमारे देश में हिन्दी माध्यम व अंग्रेजी माध्यम के प्रारूप में शिक्षा की व्यवस्था की गयी है। जिसमें भाषा को लेकर विभिन्नता नजर आती है और भविष्य में समस्या के रूप में नजर आती है। 12वीं कक्षा तक शिक्षा में माध्यम को लेकर समस्या नजर आती हो या चाहे न हो परंतु आगे जाकर जब बात किसी भी प्रकार की

प्रतियोगिता या नौकरी सम्बन्धित साक्षात्कार के अंतर्गत नजर आती है इस समस्या का संबन्ध ज्ञान नहीं अपितु भाषा होती है। सामान्य और विशेष दोनों के समक्ष समस्या के रूप में नजर आती है। इस समस्या के रूप को वर्तमान में अत्यधिक बढ़ावा मिल रहा है और वहीं दूसरी ओर एक समस्या का सिलसिला नजर आता जा रहा है।

- संगठनायुक्त अवरोध मुक्त वातावरण का निर्माण–विशेष शिक्षा स्वयं ही विशेषता को दर्शाती है जो विशेष पहलुओं को लेकर चर्चा में रहती हैं। तथा इसी से संबन्धित एक ऐसा स्तर जो बहुत महत्वपूर्ण है और वह स्तर संगठनायुक्त अवरोध मुक्त वातावरण से है। मूक बधिर शिक्षा में पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण किरदार है उसी प्रकार संगठनायुक्त वातावरण का निर्माण पाठ्यक्रम का ही अंग है। विद्यालय प्रशासन, विद्यालय व्यवस्था, कक्षा व्यवस्था, पुस्तकालय में उचित सामग्री व सहायक पुस्तकों की व्यवस्था, विद्यालयों में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में उनकी भागीदारी की व्यवस्था इन सभी का संगठनात्मक किरदार निभाता है पाठ्यक्रम डिजायन। विद्यालय प्रांगण का कार्य केवल विद्यालय तक ही नहीं अपितु पूरी शिक्षा व्यवस्था को, विद्यालय में मौजूद व्यवस्था का आधार बनाना है। मूक बधिर बालक को शारीरिक रूप से समस्या है तो उसके लिए विद्यालय में आने–जाने से समन्धित उचित यातायात व्यवस्था करना, उनके मानसिक स्तर के अनुसार शिक्षा का प्रारूप तैयार करना, मूक बधिर शिक्षा का आधार केन्द्र बिन्दु सांकेतिक भाषा है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था एक ओर यह कहती है कि मूक बधिर को सांकेतिक भाषा से कम अपितु बोलकर पढ़ाने का प्रस्ताव रखती है तथा इस समस्या की पुष्टि करना व उसमें परिवतन कर, उचित विचार विमर्श कर व्यवस्था करना और इस बात को अच्छी तरह से समझना कि ''क्या यह प्रस्ताव उचित होगा'' मूक बधिर की शिक्षा में अनेक प्रकार के विशेष प्रस्ताव आये जैसे समेकित शिक्षा व समावेशित शिक्षा का तथा अन्य परंतु इसका प्रभाव किस सीमा पर पड़ा है यह स्पष्ट करना अत्यधिक कठिन कार्य है।

2. मूक बधिर शिक्षा के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत उचित व व्यवस्थित वातावरण का निर्माणः–

ऐसी योजनाओं का निर्माण करना चाहिए जो मूक बधिर बालक के प्रत्येक स्तर को परखने के पश्चात् ही इस निर्णय पर पहुंचे की आवश्यकता क्या है। और उसको पूरा कैसे किया जाये मूक बधिर बच्चों में उनके मानसिक व सुनने में हानि को लेकर भिन्न–भिन्न स्तर होते हैं इसलिए पाठ्यक्रम का निर्माण उन सभी स्तर को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। मूक बधिर शिक्षा प्रत्येक स्तर में मौजूद अनुपयुक्त परिस्थिति को परख कर उसे हटा सके तथा ऐसी व्यवस्था की जाये जो सभी बच्चों के लिए अनुकूल हो तथा इनका पाठ्यक्रम का विकास सदैव सक्रिय अवस्था में रहे और उचित पाठ्यक्रम वातावरण का निर्माण कर सके।

अवरोधमुक्त वातावरण का मूक बधिर शिक्षा के लिए निर्माण करना तथा उनसे सम्बन्धित पहलुओं को देखना–:

एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना जो मूक बधिर की शिक्षा में रूकावट न बन सके तथा उन्हें एक शुद्ध वातावरण दे सके वह तत्व व वातावरण जो किसी कार्यपूर्ण उद्देश्यों में बाधक बन गये हों उससे मूक बधिर शिक्षा को स्वतन्त्र कराना तथा एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना जो उनकी शिक्षा को सरल एवं सहज बना सके। व्यवहार व परिस्थिति में जो आगे बढ़ने से रोकती हो ऐसी स्थिति को अवरोधयुक्त स्थिति कहते हैं।

- भावनायुक्त अवरोधमुक्त वातावरण का निर्माण–: हमारे व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है भावनायें तथा प्रत्येक व्यक्ति को भावनात्मक रूप से मजबूत होना चाहिए। अपितु हमारे दिमाग के मुख्य दो भाग हैं एक जो तार्किक है, हर तथ्य को तर्क के हिसाब से ही देखता है और दूसरा भावनात्मक, जिसका तर्क से दूर–दूर तक कोई संबन्ध नहीं है। तथा उसी प्रकार मूक बधिर बच्चे भावनात्मक रूप से काफी लचीले होते हैं उनके साथ किया गया किसी भी प्रकार का गलत व्यवहार सदैव के लिए उनके मस्तिष्क में स्थिर हो जाता है। मूक बधिर बच्चों के साथ किया गया व्यवहार, वह चाहे कैसा भी हो अच्छा या बुरा उन्हें सदैव याद रहता है क्योंकि उनका केन्द्र बिन्दु बात को समझने का या अभिव्यक्ति पर ही टिका रहता है और वह इसी आधार पर निर्णय लेते हैं। तथा इसी आधार पर अच्छे व बुरे की पहचान करते हैं इसलिए इन बच्चों के लिए भावनात्मक अवरोध मुक्त वातावरण का निर्माण करना चाहिए। जिससे

इन्हें किसी भी प्रकार की चोट नहीं पहुंच सके। इनका यह है कि ये जो देखते हैं या समझते हैं उस पर अत्यधित शीघ्रता से निर्णय ले लेते हैं। और सदैव के लिए अपने मस्तिष्क में स्थापित कर लेते हैं। किन्तु इनके द्वारा की गयी किसी भी प्रकार की गलती का अहसास होने पर तुरंत गलती के लिए माफी मांग ली जाती है इसलिए इस बात का विशेष ध्यान रखते हुए एक ऐसा वातावरण होना चाहिए जो उन्हें किसी भी प्रकार की चोट न पहुंचाये और उनकी शिक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की भावनायुक्त अवरोध या बाधक उत्पन्न न हो सके।

- पाठ्यक्रम अध्यापक और विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है व उसकी विशेषता की रूपरेखा पर चर्चा–: पाठ्यक्रम एक केन्द्र बिन्दु है जिसके चारों तरफ विविध कार्य तथा विद्यालय के समस्त क्रिया कलाप विकसित किये जाते हैं तथा साथ ही पाठ्यक्रम की संकल्पना को भलि भांति समझ लेने से शिक्षा के मनोवांक्षित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है शिक्षक और छात्र के मध्य महत्वपूर्ण बिन्दु पाठ्यक्रम ही होता है जो उन्हें उद्देश्यों का मार्ग दिखाता है विशेष या सामान्य हो किसी भी प्रकार की शिक्षा हो परन्तु महत्वपूर्ण तो तभी होता है जब शिक्षक, छात्र और पाठ्यक्रम का समावेश हो तथा उन्हें शैक्षिक व्यवहार और क्रियाओं के रूप में कैसे परिवर्तित किया जाये, इस संबन्ध मे काफी मतभेद है। तो पहले अरस्तु ने कहा था– ''जो स्थितियाँ हैं ..... मानव समाज इनके शिक्षण के प्रति न तो एक मत है और न शिक्षण के लिए अपनाये जाने वाले साधनों के प्रति।'' वर्तमान समय में भी यह मतभेद विधमान है कि उचित रूप से जो सभी बच्चों के लिए अच्छा हो, ऐसा क्या हो जो उनकी शिक्षा में समाहित किया जाये। इस समस्या के कारण ही पाठ्यक्रम और उसकी संकल्पना व इसके विकास के प्रति हमारे शैक्षिक दृष्टिकोण में एकरूपता नहीं आ सकी है। कि '' कैसे सगठित व क्रमवद्ध होकर पढ़ाया जाये'' पाठ्यक्रम का अर्थ उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है जो विद्यालय में परंपरागत रूप से पढ़ाये जाते हैं तथा उनमें ज्ञान आधार भी शामिल होना चाहिए जो धैर्य व स्थिर ज्ञान पर केन्द्रित पाठ्यक्रम का प्रभाव बालक के ज्ञान के स्तर पर महत्वपूर्ण पभाव डालता है जो उसका सम्पूर्ण शिक्षा संबन्धित आधार होता है।

नवीन शिक्षा पर केन्द्रित अधिगम विधियों का मूक बधिर शिक्षा के लिए आवश्यक है इसका उल्लेख पाठ्यक्रम के माध्यम से होना चाहिए–: पाठ्यक्रम का रूप संकुचित हो, आकार उनकी विशेषता के स्तर का हो, समावेशन की नहीं अपितु विशेष पाठ्यक्रम की आवश्यकता हो, सरकार द्वारा इस प्रस्ताव पर पृष्टि की गयी है कि समेकित शिक्षा व समावेशित शिक्षा के माध्यम से विशेष आवकताओं वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ मुख्य धारा से जोड़ा जाये जिससे कि उन्हें स्वयं को सामान्य से अलग होने का अहसार नहीं हो परन्तु यह मेरा स्वयं का अनुमान है कि ऐसा करना केवल हम लोगों के लिए तब तक उचित होगा जब तक, हम उसे दूसरों के लिए लागू करने का विचार करेंगे पर उसी को स्वयं पर लागू करके देखा जाये तो इस बात का अनुभव होगा कि इस प्रस्ताव को लाने का अर्थ है इस बात को पूरी तरीके से मान लिया जा चुका है कि हम सामान्य से अलग है। हर व्यक्ति की कोई न कोई विशेषता होती है जो उसे विशेष बनाती है वैसे ही यह एक चुनौतीपूर्ण विशेषता है यदि यह विशेष है तो इनके लिए विशेष शिक्षा के साथ विशेष पाठयक्रम की भी व्यवस्था होनी चाहिए। जो उन्हें मुख्य धारा से नहीं अपितु विशेष धारा से जोड़े, जो उनके अस्तित्व की विशेष पहचान कराता है। इसमें नवीन विचार, नवीन विधि, नवीन उपागम, नवीन क्रियाकलाप, नवीन प्रारूप, नवीन शिक्षण अधिगम की व्यवस्था होनी चाहिए।

- नवीन व विशेष विधियों के माध्यम से विशेष शिक्षा को उत्तम शिक्षा बनाना नवीन प्रकार से विशेषता को उभारना, जो कि उत्तम के साथ विशेष रूप में भी नजर आयें ऐसी विधियों को बनाकर लागू किया जाये जो उनके लिए किसी भी प्रकार की समस्या नहीं बन सके।

- <u>मूक बधिर शिक्षा और नवीन शिक्षण अधिगम विधियों में सम्मिलित राष्ट्रीय कार्यक्रमों की सहभागिता–:</u>

(i) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा।

(ii) पाठ्यचर्या नवीकरण के लिए विशेष शिक्षक व विशेष शिक्षा।

(iii) गैर–सरकारी संगठन, नागरिक समाज समूह और शिक्षक संगठनों की भूमिका।

(i) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाः–

- विषय प्रवेशः– यह विद्यालयी शिक्षा का अब तक का नवीनतम राष्ट्रीय दस्तावेज है।
- इसे अंतराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, विषय विशेषज्ञों व अध्यापकों ने मिलकर तैयार किया है।
- मानव विकास संसाधन की पहल पर प्रो0 यशपाल की अध्यक्षता में देश के चुने हुए विद्वानों ने शिक्षा को नई राष्ट्रीय चुनौतियों के रूप में देखा।

(ii) मार्गदशी सिद्धान्तः–

- ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ा जाये।
- पढ़ाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त किया जाये।
- पाठ्यचर्या पाठ्यपुस्तक केन्द्रित न रह जाये।
- कक्षाकक्ष को गतिविधियों से जोड़ा जाये।
- राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति आस्थावान विद्यार्थी तैयार हो।

(iii) प्रमुख सुझावः–

- शिक्षण सूत्रों जैसे–ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर आदि का अधिकतम प्रयोग हो।
- सूचना को ज्ञान मानने से बचाये जाये।
- विशाल पाठ्यक्रम व मोटी किताबें शिक्षा प्रणाली की असफलता का प्रतीक है।
- मूल्यों को उपदेश देकर नहीं वातावरण देकर स्थापित किया जाये।
- अच्छी विद्यार्थी की धारणा में बदलाव आवश्यक है अर्थात अच्छा विद्यार्थी वह है जो तर्क पूर्ण बहस के द्वारा अपने मौलिक विचार शिक्षक के सामने प्रस्तुत करता है।
- अभिभावकों को सख्त संदेश दिया जाये कि बच्चों की उम्र में निपुण बनाने की आकांक्षा रखना गलत है।
- बच्चों को स्कूल से बाहरी जीवन में तनावमुक्त वातावरण प्रदान करना।
- ''कक्षा में शान्ति'' का नियम बार–बार ठीक नहीं अर्थात् जीवन्त कक्षागत वातावरण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

- सहशैक्षिक गतिविधियों में बच्चों के अभिभावकों को भी जोड़ा जाये।
- समुदाय को मानवीय संसाधन के रूप में प्रयुक्त होने का अवसर दें।
- खेल आनंद व सामूहिकता की भावना के लिए है, रिकार्ड बनाने व तोड़ने की भावना को प्रश्रय न दे।
- बच्चों की अभिव्यक्ति में मातृ भाषा महत्वपूर्ण स्थान रखती है शिक्षक अधिगम परिस्थितियों में इसका उपयोग करें।
- पुस्तकालय में बच्चों को स्वयं पुस्तक चुनने का अवसर दें।
- वे पाठ्यपुस्तके महत्वपूर्ण होती है जो अन्तः क्रिया को मौका दें।
- कल्पना व मौलिक लेखन के अधिकाधिक अवसर प्रदान कराये।
- सजा व पुरस्कार की भावना को सीमित रूप में प्रयोग करना चाहिए।
- बच्चों के अनुभव और स्वर को प्राथमिकता देते हुए बाल केन्द्रित शिक्षा प्रदान की जाये।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मनोरंजन के स्थान पर सौन्दर्यबोध को प्रश्रय दे।
- शिक्षक प्रशिक्षण व विद्यार्थियों के मूल्यांकन को सतत् प्रक्रिया के रूप में अपनाया जाये।
- शिक्षकों को अकादमिक संसाधन व नवाचार आदि समय पर पहुंचाया जाये।

अगस्त 27, 2004

(i) पाठ्यचर्या नवीनकरण के लिए विशेष शिक्षक व विशेष शिक्षाः– विशेष शिक्षा पाठ्यक्रमों ''स्कूल व घर के जीवन'' विशेष छात्रों में सफलता का बढ़ावा देने के लिए उनकी कक्षाओं में शैक्षिणिक विषयों के साथ–साथ जीवन कौशल सिखाने के लिए प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना। राष्ट्रीय कार्यक्रमों में विकलांग बच्चों के शिक्षण अधिगम् क्षमता एवं कौशलों का आंकलन करना, नियमित कक्षाओं में विकलांग बच्चों के सुव्यवस्थित रूप से पढ़न–लिखने संबंधी भौतिक एवं अकादमिक अनुकूलन करना तथा उसे राष्ट्रीय कार्यक्रम में शामिल करने योग्य बनाने का प्रयास करना। इस पर ध्याएन देते हुए बच्चों की वर्तमान क्रियाकलापों का आंकलन करना तथा तत्पश्चात् विशिष्ट क्रियाकलापों को विशष शिक्षक के माध्यम से बाहर निकालना विशेष शिक्षक द्वारा विशिष्ट गतिविधि आधारित शिक्षण कार्यक्रमों का निर्माण कर उसे मुख्य धारा से जोड़ना और उनके शिक्षा की परिस्थितियों को नवीन शिक्षण अधिगम विधियों में सम्मिलित करना।

परिकल्पना

नवीन शिक्षण अधिगम विधियों पर आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन मूक बधिर शिक्षा के लिए स्वयं द्वारा उसके उचित परिवर्तन को ध्यान में रखकर लगाया गया अनुमान–:

1. पाठ्यक्रम में नवीन तथ्य, स्वयं अनुमानित दृष्टिकोण आधारित परिकल्पना में विषयों का नवीन प्रारूप– अनुमान लगाया जाये कि यदि विषयों के अन्तर्गत उचित परिवर्तन किये जायें तो ''क्या यह मूक बधिर शिक्षा में लाभप्रद होगा।'' यदि ऐसा हुआ तो इस प्रस्ताव की पुष्टि की जायेगी। इसके प्रत्येक स्तर को देखा जायेगा, उसकी अच्छाई व बुराई दोनों स्तर पर ध्यान दिया जायेगा उसकी सीमांओं को समझा जायेगा उसके बाद निष्कर्ष निकाला जायेगा। ''क्या सच में यह सही था या केवल काल्पनिक विचार था जिसकी पुष्टि नहीं की जा सकती।'' अच्छे और सही तरीकों से सीखने के लिए स्कूल में पाठ का अध्ययन करवाया जाना चाहिए। जो ज्ञान का आधार बन सके– प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर व उच्च शिक्षा का स्तर। सभी के लिए पाठ्यक्रम का उचित प्रबन्ध होना चाहिए पाठ्यक्रम के अन्तर्गत छात्रों के लिए प्रस्तुत की गयी विद्यालयी वातावरण का वह समस्त सार सम्मिलित होता है जो सभी प्रकार की पाठ्यवस्तु, पठन क्रियायें एवं संकुचित विषय सम्मिलित हो जो पाठ्यक्रम से आधारित विषयों पर ज्ञान की प्राप्ति का ही उद्देश्य माना जाये तथा उसका प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा स्तर तक प्रभावशाली बना रहे नवीन अनुमान पर आधारित विषयों में परिवर्तन–:
    - गणित विषय पर अनुमानित श्रंखला का परिवर्तित स्वरूप–: गणित विषय तार्किक क्षमता पर केन्द्रित होता है तथा यह समझ का विषय है जिसे केवल अभ्यास के माध्यम से ही किया जा सकता है। यह विषय तर्क व योग करने की शक्ति को उजागर करता है। शिक्षा का स्तर हो चाहे, जीवन में आयी आर्थिक, व्यवसाय किसी भी प्रकार का समस्या हो, सभी में गणित विषय का महत्व होता है।
    - इसमें विषय को भाग में नहीं बल्कि एक दूसरे के अन्तर्गत स्थापित कर संकुचित रूप देना चाहिए किन्तु इसका आधार बिन्दु तकनीकी गणित को ही देना चाहिए वही हमारा भविष्य में उजागर होने वाला

बिन्दु हैं वर्तमान में, आवश्यकता के अनुसार सभी विषयों का पढ़ाया जाये परन्तु केन्द्र बिन्दु तकनीकी गणित को ही रखा जाये।

2. वर्तमान में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड शैक्षणिक सत्र 2018–2019 से 9वीं व 11वीं की कक्षा के पाठ्यक्रम बड़ा बदलाव करने जा रही है। इसके तहत दोनों कक्षाओं से तीन–तीन ऐच्छिक विषयों को हटा लिया जा रहा है। कन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने स्वयं से संबद्ध विद्यालयों को 9 मार्च को पत्र देकर जानकारी दी।

इस तथ्य की पुष्टि करते हुए इस पर यह विचार रखा जाये कि यदि सामान्य शिक्षा में उसके सुविधा के अनुसार उचित परामर्श के बाद विषयों में परिवर्तन किया जा सकता है। तो मूक बधिर शिक्षा के लिए उचित व आवश्यक परिवर्तन क्यों नहीं किये जा सकते।

- भाषा संबन्धित समस्या पर केन्द्रित माध्यम का तुल्नात्मक आयाम–: हमारे देश में हिन्दी माध्यम व अंग्रेजी माध्यम का आयाम चल रहा है जो किसी भी रूप से एक दूसरे से सामान्य नहीं है क्योंकि दोनों ही केवल भाषा है अपने–अपने राष्ट्र के अनुसार निर्धारित की गयी, किंतु वर्तमान में अंग्रेजी भाषा को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है यह कोई सामान्य समस्या नहीं अपितु तुल्नात्मक समस्या हो गयी है किसी भी प्रकार की प्रतियोगिता हो या नौकरी के लिए लिया जाने वाला साक्षात्कार हो सभी में ज्ञान को अंग्रेजी माध्यम से अधिक महत्व दिया जा रहा है। भारतीय संसद भवन में भी विशिष्ट पद पर कार्यान्वित व्यक्तियों को अंग्रेजी भाषा में भाषण देते हुए देखा व सुना गया यह इस बात की पूरी तरह से पुष्टि करता है कि अंग्रेजी के चलते हिन्दी भाषा, जो हमारी राष्ट्र भाषा है उसको दबा दिया गया है यदि कोई अंग्रेजी में बात करे तो वह ज्ञानी है और हिन्दी में बात करे तो उसे ज्ञान नहीं है। और अब यह परम्परा में आ गया है यह कोई समस्या नहीं है किन्तु हिन्दी भाषा का अभाव है परन्तु इसके अलावा यह समस्या और भी है कि यदि हिन्दी माध्यम का कोई मूल्य ही नहीं है तो शिक्षा व्यवस्था में से हिन्दी माध्यम को हटा देना चाहिए। केवल अंग्रेजी माध्यम को ही रखना चाहिए। सरकारी विद्यालय से लेकर निजी विद्यालयों में, प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा स्तर तक सभी में अंग्रेजी माध्यम को रखना चाहिए। सभी के पाठ्यक्रम में अंग्रेजी माध्यम को लाना चाहिए। विशेष रूप से मूक बधिर शिक्षा में जो स्वयं में विशेष का आधार है अत्यधिक आवश्यकता है।

- ग्रामीण स्तर पर मूक बधिर शिक्षा में परिवर्तन–: भाषा संबन्धित दिशा– ग्रामीण स्तर पर भी मूक बधिर शिक्षा को महत्व दिया जाना चाहिए गांव में रहने वाले मूक वधिर बच्चों के लिए यातायात समस्या को समझना चाहि।

3 उस शिक्षा पाठ्यक्रम को व्यवहारिक बनाने पर चर्चा–: सेन्ट्रल हिमालयन इन्वारमेन्ट एसोसिएशन क्रिया के संयोजन में यहाँ हुई बैठक में विभिन्न मामलों में चर्चा की गई मुख्य रूप से उस शिक्षा के पाठ्यक्रमों के समय अनुसार व्यवहारिक बदलाव पर बल दिया गया। यूरोपियन यूनियन के वित्त पोषित सनरेज कार्यक्रम के तहत इसका आयोजन किया गया था। बैठक में कुमांऊ विवि के डा. आशीष तिवारी ने वनाग्नि और पेयजल सम्बन्धि पाठ्यक्रम की रूपरेखा रखी विवि के ही प्रो. पी.सी. तिवारी ने कॉर्पोरेट सेक्टर की मांग पर प्रशिक्षण संस्थानों में कोर्स शुरू करने पर बल दिया जेएनयू दिल्ली के प्रो. पी.के. जोशी ने परियोजना के अनुरूप अपेक्षित सहयोग पर राय जाहिर की।

4 कालेजों के 70 फीसदी पाठ्यक्रम नये सत्र से बदल जायेंगें की आशंका है– कार्यालय संवादाता गुरूग्राम समेत प्रदेश के तमाम कॉलेजों में नये सत्र से पाठ्यक्रम में बड़े स्तर से बदलाव किये जायेगें। सूत्रों के मुताबिक पाठ्यक्रम बदलाव को लेकर उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा बनाये गयी 11 कमेटियों की बैठक हुई। सबसे ज्यादा अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम बदलाव के लिए गठित 6 सदस्य कमेटी ने तीन प्रोफेसर गुरूग्राम के हैं।
काशी विद्या पीठ 14 नये पाठ्यक्रम को एकेडेमिक काउन्सिलिंग मंजूरी प्रदान कर दी गयी।

5 विषयों को लेकर पाठ्यक्रम में हुये बदलाव की आशंका–: पहली कक्षा से लेकर 12वीं कक्षा तक देश भर में सभी विद्यालयों में एक जैसी पढ़ाई हो इसके लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम.एच.आर.डी) सभी राज्य सरकारों और विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के साथ मिलकर योजना बना रही है।

- हिन्दी भाषा की तुलना में अंग्रेजी भाषा का महत्व कहीं ज्यादा प्रचलित है। हिन्दी जो कि राष्ट्र भाषा है वो तुल्नात्मक स्थिति के सापेक्ष में आ गयी है।
- समस्या ये नहीं है कि अंग्रेजी भाषा को बोला जा रहा है। समस्या ये है कि हिन्दी भाषा को भुलाया जा रहा है जो शिक्षा का एक गंभीर प्रारूप है।

- हिन्दी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम का शिक्षा में अन्तर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है जो छात्र–छात्राओं को शिक्षा सम्बन्धित प्रतियोगिता में भाषा के कारण दिखता है।
- मेरे स्वयं के द्वारा शोध में इस क्रिया पर अधिक जोर दिया जा रहा है कि शिक्षा में पाठ्यक्रम को लेकर अधिक बदलाव हुये हैं।

कार्यप्रार्णी व तरीके

शिक्षा को विशेष रूप देने के लिए कार्य प्रार्णी बनानी होगी जो निम्नलिखित है– नवीन शिक्षण अधिगम विधिया पर आधारित पाठ्क्रम मूक बधिर शिक्षा के लिए पर अनुमित बनायी गई कार्यप्रार्णी व तरीके–

(1) संकुचित रूप में पाठ्क्रम का निर्माण :– उचित विषयों का चयन कर जो विषय इसके आलावा आते है उन्हें हटा देना चाहिए, भाषा सम्बन्धित संचार कौशल जानकारी और संचार तकनीकी विज्ञान प्रकाशन और कार्यालय की जानकारी समुच्चय अंतराजाल, फैशन संबधित विषय आदि इन सब को पाठ्यक्रम से हटाकर संकुचित पाठ्क्रम बनाया जाऐ।

(2) विषय का संबंध भाषा केन्द्रित न होकर केवल ज्ञान केन्द्रित होना चाहिए इस पर कार्य करने का अर्थ है।– सभी शहरी व ग्रामीण विद्यालयो को अलग करो उसके पश्चात मूक बधिर विद्यालयों की गणनाः–

(3)बेशिक शिक्षा अधिकारी इें में सर्व शिक्षा अभियान के तहत ें विश्रेष शिक्षा हो या सामान्य सभी निःशुल्क शिक्षा की किया प्रार्णी की व्यवस्था और निरिक्षण का अधिकार होता है।

(4) इसके चलाया गया मूक बधिरो के लिए 10 माह तक के लिए चलाया गया एक्सीलेरेटेड लर्निंग कैम्प का आयोजन किया गया इसमें बच्चों को खाना, रहना, दैनिक आवश्यकताओं का सरकार द्वारा व्यवस्था की जाती है जिसे वसिकशिक्षा अधिकारी संचालित करता है।

(5) विशेष शिक्षा संबंधित किसी प्रकार की समस्या और सुझाव की प्रक्रिया को नजदीकी रूप से करने के लिए इें से संपर्क करना होता है तथा किसी भी प्रकार की समस्या को लेकर परिवर्तन के विचार से दस्तावेज केवल विद्यालयी प्रशसन अधिकारी के माध्यम से बनकर सरकारी रणनीतियों में सुझाव सहिद दिया जाता है।

(6) विकलांग कल्याण अधिकारी से सुझाव लिया जा सकता है विकलांगों से संबंधित जो भी जानकारी या परिवर्तन लाना तो दिव्यांजन अधिकारी को सम्पर्क करते है या केवल स्तर पर ही है रहता है

(7) राज्य दिव्यांजन अधिकारी को राज्य में कितने मूक बधिर विद्यालय है उनका ऑकड़ा एकत्र करके, समस्या की सूचि बनाकर, परिवर्तन के उद्वेश्य उन्हें पेश की जाती है वह अपना सुझाव देते है व क्रियाकलाप में सहयोग देते है।

(8) सूचना का अधिकारी– जिले में किसी भी को लेकर शदि शिकायत करनी है या शिक्षा के दोरान तो कर सकते है इसमें सामान्य व दानो का प्रताव पारित किया जाता है।

(9) मण्डलीय शिक्षा व अधिकारी अधिनियम के अर्न्तगत मण्डल कि अर्न्तगत शैक्षिक व्यवस्था को कृमबृद्व करने के बाद ऑकड़ो का लिखित प्रस्ताव बनाकर को दिया जाता है।

(10) ऑकड़ों की भूमिका – किसी समस्या को या सुझाव के लिए समस्या को पहचान कर उस पर प्रस्ताव बनाकर पेश किया जाता है उसमें सहीं कृम, उचित मात्रा, समस्या केंद्रित बिन्दु, आकड़ो का सामंजस्य आदि सभी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सीमायें

नवीन शिक्षण अधिगम विधियों पर आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन मूक बधिर शिक्षा कि लिए बनाई गई स्यवं के अवधण पर परिकल्पना की सीमायें निम्नलिखित हैः–

(1) विद्यालयी शिक्षा को केवल अंग्रेजी माधयम में ही रहना का प्रस्ताव का हिन्दी पर उचित प्रभाव न पड़ने की आशंका :– हिन्दी का महत्व केवल विषय या बोलचाल तक सीमित नहीं है क्योंकि हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है हमारे हमारे राष्ट्र का सम्मान, का अभाव, जो प्रत्येक भारतीय के लिए एक कलंक स्वरूप बात होगी। यदि दूसरी और यह भी कि मूक बधिर बच्चों के लिए सहीं नहीं होगा क्योंकि उनकी मातृ भाषा सांकेतित है हिन्दी भाषा से वो वैस ही बहुत दूर है क्योंकि सांकेतित भाषा से उन्हें पढ़ाया जाता है (अमेरिकन सांकतित भाषा) को ही अपनाया जा रहा है तथा यह उन्हें देश कि परम्पराओ की मुख्य दारा से अलग कर रहा है वर्तमान में अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम को लेकर जो विवाद चल रहा उसका प्रभाव मूक बधिर शिक्षा पर भी पढ़ रहा है एक तरफ इस बात पर विचार किया जा रहा है कि ''उनका आवश्यकता क्या है'' और'' कैसे पुरा किया जा सकता है'' उसके प्रकार की नवीन विधियों को शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए प्रयोग किया जाये तथा पाठ्यक्रम में किस विषय का महत्व अधिक है और उसे कैसे संकुचित कर पढ़ाया जाये जो उन्हें सुविधा जनक लगें और उनके लिए सरल एवं सहज पूर्ण हो

(2) कॉलेज के 70 फीसदी पाठ्यक्रम वदलायों की आसंका प्रस्ताव पर यह प्रश्न बनता है कि क्या यह प्रत्येक प्रकार की शिक्षा के लिए सहीं होगा विषेश शिक्षा को भी इसमें महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिये

(3) गैर सरकारी संगठन को परिवर्तित कर सरकारी संगठन बनाने का विचार–:

यदि इस विचार की पुष्टि की गयी तो इससे शिक्षा में लाभ होगा और हानि की भी आशंका है।

(i) शिक्षक द्वारा सरकारी विद्यालयों की तरह पढ़ाने का तरीका अपना लेने का भय।

(ii) शिक्षक द्वारा शिक्षा को विशेष विधियों को न अपनाने का भय।

निष्कर्ष

इसका एक मात्र उद्वेश्य है यह विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र छात्राओं को जो मूक बधिर की श्रेणी में आतें है उनका उचित मार्गदर्शन के साथ उनकी समस्या को समझा गया, परिचय दिया गया, उसके अर्न्तगत आने वाले व मौजूद पहलुओं साझा किया गया उससे सम्बंधित ऐतिहासिक बिन्दुओं का अध्ययन किया गया '' शीर्षक'' के आधार पर सर्वप्रथम '' समस्या किया है'' का अर्थ निकाला गया उसके लिए सुझाव व परिकल्पना दी गई तथा सीमाओं का भी उल्लेख किया गया मूक बधिर बालको के लिए पाठ्यक्रम में नवीन शिक्षण अधिगम विधियों को प्रस्तुत किया गया (i) नवीन शिक्षण विधियों को सम्मिलित कर शिक्षा में, शिक्षक के पढ़ाने के तरीके, राष्ट्र द्वारा दिये गये बदलाव में पाठ्यक्रम की भूमिका।

(ii) माध्यम को लेकर शिक्षा में जो भी बदलाव किये जाये वा विशेष शिक्षा को हानि नहीं पहुचाये इस पर विचार कर सुधारने का प्रयास।

(iii) मूक बधिर शिक्षा में किसी भी प्रकार का अवरोध उत्पन्न नहीं होना चाहिए इस पर व्याख्या की गई है।

References

Home> Curriculum stories > Case studies > Curriculum implementation>

References

References

Bean, J. (1997) Curriculum integration. Designing the core of democratic education. New York and London: Teachers College Press, Columbia University.

Boyd, S., Bolstad, R., Cameron, M., Ferral, H., Hipkins, R., Mc Dowall, S., & Waiti, P. (2005) Planning and managing change: Messages from the Curriculum Innovation Projects. Wellington: Ministry of Education.

Boyd, S., & Watson, V. (2006). Shifting the frame: Exploring integration of the key competencies at six normal schools. Wellington: New Zealand Council for Educational Research.

Carr, M. (2001) Assessment in early childhood settings. Learning stories. London: Paul Chapman Publishing.

Dowden, T. (2007). Relevant, challenging, integrative and exploratory curriculum design: Perspectives from theory and practice for middle level schooling in Australia. The Australian Educational Researcher, 3 (2), 51-71.

Gilbert, J. (2005). Catching the knowledge wave? the knowledge society and the future of education. Wellington: NZCER Press.

Hargreaves, D. (2004). Learning for life: The foundation of lifelong learning. Bristol: Policy Press.

Hipkins, R (2006a). Background to the Key competencies. Areport prepared by NZCER for the key ministry of Education. Wellington: New Zealand Council for Educational Research Available

at: http://nzcurriculum.tki.org.nz/referces#H

Hipkins, R. (2006b April). Key compentencise: Challenges for implementation in s national curriculum. Paper presented at the NZCER conference, Key Competencies the old or creating the new?, Wellington.

Hipkins, R Roberts, J., & Bolstad, R (2007). Kick Starts series: Key competencies, the journey begins Wellington: NZCER Press.

Maharrey, S. (2007). introductory letter that accompanied the revised New Zealend Curriculum. Wellington: Office of hon steve Maharey.

Martiello, M., & Cook, G. (2000). Interdisciplinary inquiry in teaching and learning (2nd ed.). New Jersey: Prentice-Hall.

Ministry of Education. (2006). Let's talk about: Personalised learning. Wellington: Auther

Ministry of Education (2007a) The New Zealand Curriculum, Wellington, Learning Media.

Ministry of Education (2007b). Literacy learning progressions: Meeting the reading and writing Demands of the curriculum. Draft for consultation.

Wellington: Learning Media.

Murdoch, K. (1998). Classroom connection: Strategies for integrated learning. Melbourne: Eleanor Curtain Publishing.

Newmann, F., Smith, B., Allensworth, E., & Bryk, A. (2001). Instructional program coherence: What it is and why it should guide school improvement policy. Educational Evaluation and Policy Analysis, 23(4), 29-321.

Queensland State Education. (2000). Draft New Basics technical paper, Version 3 April 2000. Brisbane: New Basice Unit, Queensland Government.

Reid A. (2006). Key compemtencise A new way forward or more of the same? In B. Webber (Ed.), Key compentencise: Repackaging the old or creating the new? conference proceeding (pp.5-15). Wellington: NZCER Press.

Schagen, S., & Hipkins, R. (2008). Curriculum changes, priorities and issues. Findings from the NZCER secondary 2006 and primary 2007 nnatinal surveys. Wellington: New Zealand Council for Educational Research.

The New London Group. (2000). A prdagogy of multiliteracise: Desining social futures. In B. Cope & M. Kalanzis (Eds.), Multiliteracies: Literacy Learning and deasing of social futures (pp. 9-37). South Yarra, Australia: Macmillan.

UNESCO. (1996). Learning: The treasure within. Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty First Century. Paris:

Author.

Wood, R. (205)s.Democratic leadership in education. London: Paul Chapman.

Published on: 23 Apr 2009

Return to top

Sitemap